Gmail **Manju Mandhana <manjumandhana@gmail.com>**

Fwd: पीहर के आंगन से ससुराल के महलों तक का मेरा सफर

1 message

Aruna Bahety <arunabahety@gmail.com> Tue, Mar 12, 2019 at 8:13 PM
To: Manju Mandhana <manjumandhana@gmail.com>

पीहर के आंगन से ससुराल के महलों तक का मेरा सफर..

कितना सुन्दर होता है वो पीहर का आंगन और उसकी मिट्टी की खुशबू, जब भी याद आती है तन मन महका देती है। इन्हीं यादों के सफर से गुजरती हूं तो लगता है मानो वो गलियां और चौबारे छूटे नहीं हैं उन्हें तो मै अपने आंचल में सितारों की तरह टांक कर लाई हूं। वो परियों का देश ही तो था जिसमें एक बिखरे बालों वाली, धूल मिट्टी में लथपथ, अपनी दुनिया में मस्त एक नन्ही परी अपनी सहेलियों के साथ नन्हे नन्हे क़दमों से सुनहरी सुबह से सिंदूरी शाम तक न जाने कितनी गलियां नाप आती थी। उसको लगता था माता पिता तो जादूगर होते हैं, जो पलक झपकते ही उसकी हर इच्छा पूरी कर देते हैं। ऐसी दुनिया में किसी को क्या परवाह होती है?? बचपन कितना मासूम होता है, वो ईर्ष्या द्वेष कुछ नही समझता, वो समझता है तो बस चारों तरफ बिखरा हुआ प्यार।

चार बहनों और छोटे से भाई का परिवार। जिस तरह छोटा भाई सब बहनों की आंखों का तारा था, उसी तरह सब बहनें भी पापा मम्मी की शहजादी थीं। याद नही हम बहनों को कभी वो नही मिला जो भाई को मिला हो।

समय कब एक सा रहता है। कभी खुशी तो कभी गम जीवन का हिस्सा होते हैं। जीवन की सब बाधाओं को हंसते हंसते एक दूसरे का हाथ पकड़ कर पार कैसे करते हैं, यह पापा मम्मी को देखते हुए कब सीख गए पता ही नही चला। बच्चों की खुशियां माता पिता के सपने बन जाते हैं, यह तब एहसास होता है जब हम खुद उस जगह पहुंचते हैं।

पापा ने जहां हमको खुले आसमान में पंछी की तरह उड़ने की आज़ादी दी, वहीं मां ने दोस्त बन कर दुनिया के अच्छे बुरे से रूबरू कराया। पापा ने हरदम सिर्फ हमारे लिए ही पाई पाई को जोड़ा और कभी खुद के लिए कुछ नही सोचा।

पढ़ने लिखने के शौक ने मुझे किताबों का तो दोस्त बना दिया पर घर के कामों से दूर का ही रिश्ता रहा हमेशा। मुझे लगता था किसी को भला चौका चूल्हा कैसे अच्छा लग सकता है। यह नहीं सोचा कि मां भी तो हमारे लिए यह खुशी खुशी करती हैं।

बिटिया पराई होती है, जब कभी किसी से सुनती थी मन घबरा जाता था। लेकिन कहते हैं ना, बिटिया का रिश्ता हवा के मीठे झोंके जैसा होता है, पहले सबसे प्रीत लगाती है और फिर चिड़िया बन कर उड़ जाती है और इस तरह एक दिन यही सबकी राजदुलारी ने अपने माता पिता का साथ, सखियों का हाथ, भाई बहनों का प्यार छोड़कर एक नए सपनों के महल में धड़कते दिल से कदम रखा। माता पिता ने संस्कारों की पोटली के साथ अपने कलेजे के टुकड़े को पराए घर, अनजान शहर और नए रिश्तों में बंधने न जाने कैसे छोड़ दिया। बेटियों की यही तो कहानी होती है।

इस तरह छोटे छोटे सपनों में जीने वाली छोटी सी जान ने एक बड़ा सपना देख लिया एक नए घर को अपना घर बनाने का।

जब नई दुल्हन घर में प्रवेश करती है तो दीवार पर लगे पीले छापों के साथ सुनहरे सपने भी अपनी पलकों में सजा कर लाती है। कलश के बिखरे चावल के दानों में नए नए रिश्तों का प्यार समेटने की उमंग उसमें नई खुशियां भरती है। ऐसे ही जब कुमकुम भरे पैरों से नए घर में क़दम रखा तो मानों सारी दुनिया के रंग चारों तरफ बिखर गए हों। जब अनजाने डर से दिल की धड़कने तेज हुईं तो दिल ने हौले से उसकी तरफ इशारा कर दिया जो हाथों में हाथ लेकर, मांग सितारों से भर कर, यहां तक लाया। अनजाने प्रेम पर पता नही कहां से इतना विश्वास हो गया कि कुछ ही पलों में कोई अनजाना, दिल ही दिल में जीवन भर का हमराज बन गया और लगा मुझे अब मेरी फिक्र कहां..अब तो कोई और ही है मेरी फिक्र करने वाला।

जिस घर में डरते डरते क़दम रखा था वह धीरे धीरे मुझे अपना लगने लगा। चुनौतियां बड़ी थीं तो डगर कठिन। कठिन इसलिए की घर में तो जगह बन ही जाती है पर सबके दिलों में जगह बनाना कहां आसान होता है। शुरुआती दिन तो सभी के रंग बिरंगे होते हैं, कब दिन होती है, कब शाम ढल जाती है पता ही नही चलता। ऐसा लगा परियों की दुनिया से सपनों के दुनिया में आ गई। नई बहू का लाड़ प्यार, दिन रात सजना संवरना, नए नए लोगों से मिलना एक नई ही दुनिया में ले गया था। दिन रात किताबों से चिपकी रहने वाली लड़की के लिए यह एक नया एहसास था। लेकिन जब सपनों की दुनिया से उतर कर हकीकत का सामना हुआ तो लगा बेटी होना जितना आसान है, बहू होना उतना ही कठिन। बहू शब्द के साथ ही जुड़ जाते हैं कर्तव्य और जिम्मेदारी जैसे भारी भरकम शब्द। कर्तव्य.. नए रिश्तों के प्रति, और जिम्मेदारी.. एक नए घर को घर बनाए रखने की और उसे अपना घर बनाने की। सब कुछ इतना आसान तो नही होता। विचारों में टकराव, एक दूसरे से अपेक्षाएं और सबसे बड़ी बात अपने उन लोगों के बगैर रहना जो हरपल हमारा संबल थे सहारा थे। लेकिन शायद ईश्वर ने नारी को पुरूष से ज्यादा सहनशीलता और समर्पण के साथ बनाया है। तभी तो धीरे धीरे ही सही मैने आखिरकार अपने सपनों के महल को प्यार और विश्वास से हकीक़त की दुनिया में उतार लिया।

आज मेरे पास दो घर हैं, एक अपना वही परियों का देश, जिसमें कितनी भी बड़ी हो जाऊं आज भी सबकी लाडली परी ही रहूंगी और एक यह घर जिसकी मै रानी हूं। वो रानी जो सबको प्यार भी करती है और समय आने पर प्यार से या जिद से अपनी बात भी मनवाती

है। जो कर्तव्य और जिम्मेदारी का लबादा ओढ़ कर घर में आयी थी वो सिकुड़कर प्यार की डोरी बन गया और उस डोरी में कितने ही अनमोल मोती हैं जिनको मै बड़े प्यार से हमेशा सहेज कर रखती हूं क्योंकि यही तो मेरी पूंजी है।

अलका माहेश्वरी
702, श्रेयस अपार्टमेंट
मालगंज इंदौर (म. प्र.)

94250 95165